मूल्य रु. ५-००
श्री स्वामिनारायण
मासिक
प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महिने की ११ तारीख
सळंग अंक १८५ • नवम्बर २०२२
आचार्य वंदना
प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

छपिया गौशाला की मुलाकात
लेते हुये महाराजश्री

छपिया यात्रीभवन का
शुभारंभ

संस्थापक
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७

प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.in

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी
(महंत स्वामी)
मो. ९३१३७१९२३२

पत्र व्यवहार
श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
मो. ९३१३७०६०९५
magazine@swaminarayan.in
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००
લવાજમ - વાર્ષિક : રૂા. ૫૦-૦૦ ● છુટક નકલ રૂા. ૫-૦૦

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - १६ ● अंक : १८४ ● नवम्बर-२०२२

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३	आचार्य वंदना	०६
०४	''आचार्य वंदना'' श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुपो के मुख से अमृत वचन	२३

अस्मदीयम्

चातुर्मास और दिवाली के दिन बीत गये। भजन, भक्ति और आनंद उत्सव पूरे हो चुके है। ऐसा संसार मे लगता है। लेकिन भगवान के भक्त के लिये स्थायी दिवाली जैसे आनंद के साथ परमेश्वर के अखंड स्मृति मे निमग्न रहना चाहिए। इसलिये स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी कहते है कि "मेरा तो प्रतिदिन दिवाली है। भगवान जैसे भगवान का बनकर उनके सेवा में लगे रहे। सभी प्रकार की चिंता से मुक्त होकर अपने जीवात्मा के कल्याण के लिये जैसा हो वैसा साधन करना चाहिए। इस में ही समझदारी है। संसार के नाशवान तथा दुःख देने वाले पदार्थो को मन में से निकालकर भगवान से सम्बन्ध रखने वाले भक्त-संतो को याद रखना चाहिए। और विषय-भोग विलास से दूर रहकर श्रीजी महाराज द्वारा बताये गये। उत्तम, मध्यम तथा कनिष्ठ तीन प्रकार के वैराग्य में से अपने बुद्धि विवेकानुसार वैराग्य धारण करके अपने आराध्य देव परम ब्रह्म परमेश्वर सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान और उनके रुप को ध्यान में रखकर सदैव प्रयास करते रहना चाहिए। इससे हरि कृपा अवश्य मिलती है। जिसकी कृपा से इस जन्म-मृत्यु के बंधन से मुक्त होकर भगवान के धाम को प्राप्त करना चाहिए।

संपादकश्री (महंत स्वामी) शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

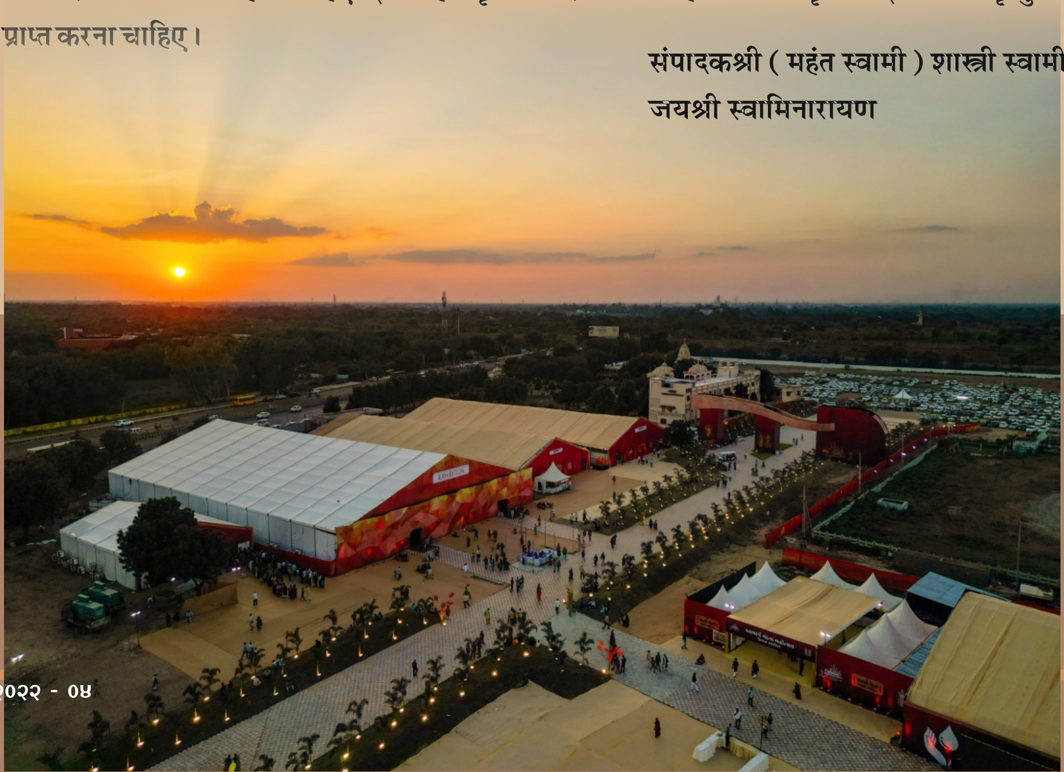

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा
(अक्टूबर-२०२२)

१ से ५ ५० वे जन्मोत्सव ''आचार्य वंदना'' महोत्सव प.पू. बड़े महाराजश्री के सानिध्य में, प.पू. भविष्य के आचार्यश्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के अध्यक्षपद पर श्री नरनारायणदेव देश के समस्त वंदनीय संत और हजारो हरिभक्तो की उपस्थिति में उल्लासपूर्वक मनाया गया । पर्व ग्राउन्ड जमीयतपुरा ।

१४ श्री स्वामिनारायण मंदिर ईडर शतामृत पाटोत्सव अपने शुभ सानिध्य में उल्लासपूर्वक मनाये ।

२४ अहमदाबाद कालुपुर मंदिर में काली चौदश के दिन श्री हनुमानजी महाराज का पूजन - आरती अपने कर कमलो द्वारा किये थे । अहमदाबाद कालुपुर मंदिर के प्रसादी के सभामंडप में समूह शारदा पूजन-चोपडा पूजन अपने करकमलो से किये थे ।

२६ नये वर्ष परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की अनेक प्रकार फ्रुट का अन्नकूट आरती की गयी । इसके पश्चात अपने कार्यालय में सभी हरिभक्त संतो को दर्शन आशीर्वाद का लाभ दिये थे ।

३० श्री स्वामिनारायण मंदिर शेखपाट (जि. जामनगर - मूली प्रदेश) (स.गु. निष्कुलानंद स्वामी का जन्म स्थल) में मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा अपने करकमलो द्वारा किये थे । वहाँ से बोडका (हालार) पारायण प्रसंग पर पधारे थे ।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा
(अक्टूबर-२०२२)

१ से ५ प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री का ५० वाँ जन्म उत्सव ''आचार्य वंदना'' महोत्सव अपने अध्यक्षस्थान पर से मार्गदर्शन प.पू. बड़े महाराजश्री के सानिध्य में सभी संत - हरिभक्त सुंदर प्रयास से उल्लासपूर्वक मनाया गया । पर्व ग्राउन्ड जमीयतपुरा ।

८ श्री स्वामिनारायण मंदिर ईडर शतामृत पाटोत्सव के अवसर पर पधारना ।

२४ श्री स्वामिनारायण बाग असारवा श्री वीर हनुमानजी महाराज की पूजा-आरती किये थे। अहमदाबाद मंदिर में काली चौदश के दिन श्री हनुमानजी महाराज का पूजन - आरती प.पू. आचार्य महाराजश्री के साथ आये ।

अहमदाबाद मंदिर के प्रसादी के सभामंडप में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री ने समूह शारदा पूजन-चोपडा पूजन वेदोक्त विधि से पूर्ण किये थे ।

२६ नये वर्ष के दिन परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कई फलो से आरती स्वयं किये थे ।

२८ श्री स्वामिनारायण मंदिर गवाडा गाँव में पारायण प्रसंग पर पधारना ।

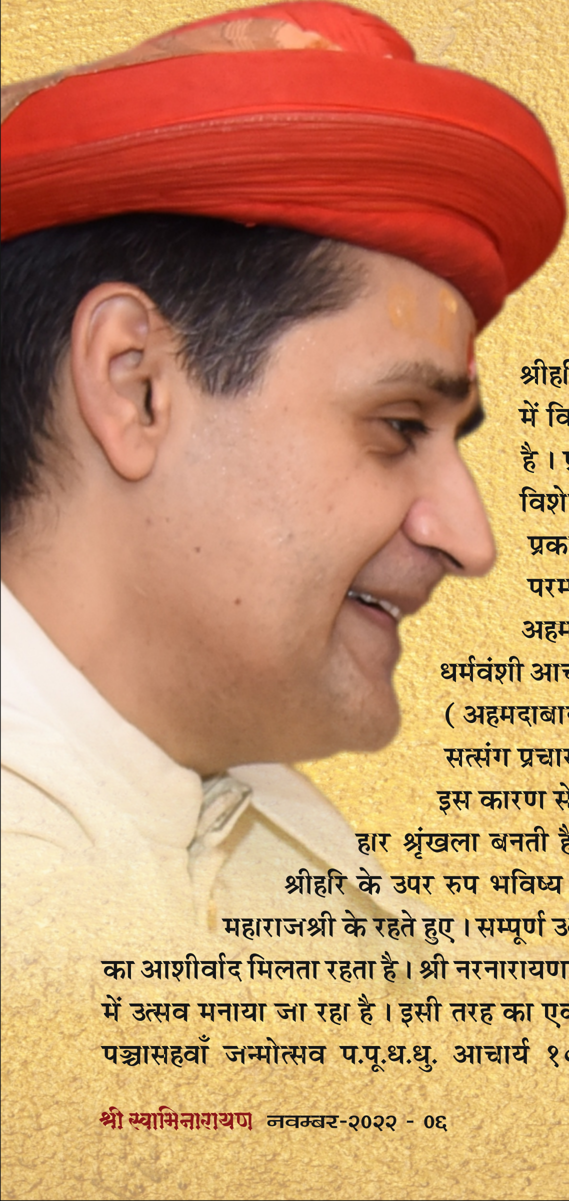

आचार्य वंदना
पञ्चाशत् जन्मोत्सव

लेखक : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापूनगर)

आराध्यदेव भगवान श्रीहरि के पोषण हेतु, अन्य प्रदेशो में विचरण करते रहना स्वभाविक है । प्रत्येक मंदिर में उत्सव समैया विशेष रुप से होता रहता है । उसी प्रकार श्रीहरि के वंशज आचार्य परम्परा में उत्तर विभाग की गद्दी अहमदाबाद में होने के कारण, धर्मवंशी आचार्य श्री विशेष करके श्रीनगर (अहमदाबाद) में रहकर देश-विदेश में सत्संग प्रचार हेतु विचरण करते रहते है । इस कारण से श्रीनगर में उत्सव समैया की हार श्रृंखला बनती है । उत्सव के अध्यक्ष पद पर श्रीहरि के उपर रुप भविष्य के आचार्यश्री प.पू. लालजी महाराजश्री के रहते हुए । सम्पूर्ण उत्सव के प्रबन्ध में पूरे धर्मकुल का आशीर्वाद मिलता रहता है । श्री नरनारायणदेव की कृपा से संक्षिप्त समय में उत्सव मनाया जा रहा है । इसी तरह का एक महोत्सव ''आचार्य वंदना'' पञ्चासहवाँ जन्मोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के प्रगट दिन को ता. ०५-१०-२०२२ विजया दशणी के दिन ५० वर्ष पूर्ण होने पर ता. ०१-१०-२०२२ से ता. ०५-१०-२०२२ तक जहाँ पर पर्व मनाया गया था । उसी पर्व के मैदान प्रभा हनुमानजी के पास, जमीयतपुरा, अहमदाबाद में भव्यरुप से सर्वोपरि प.पू. लालजी महाराजश्री व्रजेन्द्रप्रसाजी महाराजश्री के अध्यक्ष पद से धर्मकुल परिवार के साथ मनाया गया था ।

समाज सेवा : प.पू. महाराजश्री को अपने जन्म दिन मे सहज पण खर्च स्वीकार नही । फिर भी व्यक्तिगत नही श्रीहरि द्वारा स्थापित आचार्य पद पर यह उत्सव के माध्यम से सम्प्रदाय द्वारा संचालित मानवतालक्षीय और समाजोयपयोगी प्रबन्ध से मानव सेवा और सत्संग होता रहता है । इसी शुभ उद्देश्य से तथा आप की अनुभूति से प.पू. लालजी महाराजश्रीने सर्वप्रथम इस महामहोत्व की बात कही ता. २६-६-२०२२ और इसके बाद पूर्ण रुप से धोषणा ता. १३-०७-२०२२ गुरुपूर्णिमा के पवित्र अवसर पर की गई ।

वर्षाकाल होने के कारण मैदान तैयार करने का समय नही था। ता. १५-८-२२ तक तो मैदान मे घास उसी हुई थी। गाँये हरी घास चरती थी। उत्सव के मात्र एक माह पूर्व मैदान की तैयारी चल रही थी। लेकिन वर्षा के कारण अपूर्ण थी। फिर भी इसके बीच में कालुपुर मंदिर तथा संलग्न मंदिर द्वारा वृक्षारोपण, ग्राम सफाी जरुत मंद लोगो को वस्त्रदान, चश्मा वितरण, हियरिंग किट वितरण, विद्यभ्यास तथा स्पोर्टस में तेजस्वी बच्चो को स्कोलरशिप, वृक्षाक्षम में रोगियो तथा उनके परिवार को भोजन वितरण, प्रोस्टेतिक को फल दिया गया था। पशुओ को आहार वितरण थता पशुचिकित्सक सेवा देने वाले आदमियो की सहायता, ग्रामीण स्वच्छता तथा व्यसन मुक्ति अभियान जैसे कार्यक्रमो के द्वारा समाज सेवा चालू रही।

श्रम यज्ञ : उत्सव के मात्र १५ दिन ही शेष रह गये थे। उस समय वर्षा तथा वर्षा की भविष्यवाणी चालू ही थी। इसके मध्य मैदान पर प.पू. लालजी महाराजश्री तथा संतो ने ठाकुरजी की प्रार्थना किये। और चमत्कारिक रुप से मेघराज ने विराम लिया। २० दिन विराम के बाद उत्सव की पूर्णाहुति के दूसरे दिन फिर वर्षा हुई। भक्तगण १५ दिन के अंदर सेवा पूर्ण किये। प.पू. गादीवालाश्री के आशीर्वाद से तथा पू.श्रीराजाश्री के मार्गदर्शन में मैदान में घास काटना ईटो पर मिट्टी का लेपन जैसे श्रम बहनोने किया था। संत-भक्त सभी के पुरुषार्थ से और प.पू. लालजी महाराजश्री पूरे मार्गदर्शन में मात्र १५ दिन में मैदान पर सभी प्रकल्प पूर्ण हो गये थे। प.पू. लालजी महाराजश्री मैदान पर प्रतिदिन पूरे समय तक रहते थे १२६ सदस्यो की कोर कमेटी तथा २० कमिटियो की रचना करके पूर्ण मार्गदर्शन दिये थे। अलग-अलग भाई-बहनो की संख्या मिलकर २२०० लोग स्वयं सेवको ने उत्सव के बीच सेवा तथा श्रमदान किये थे। महोत्सव की शोभा बढाये थे। उत्तर गुजरात दंढाव्य देश, मूली देश, भुज, अहमदाबाद, राजस्थान के बाद राजकोट, जुनागढ और सुरत स्थानो से स्वयं सेवक आये थे।

आचार्यश्री के प्रतीक सम पगडी का रंग लाल होने के कारण आचार्य पद का उत्सव होने के कारण दरवाजे मंदिर, प्रकल्प स्वयं सेवको के शर्ट तथा स्वयंसेविका बहनो के साडी का रंग सब कुछ लाल रंग का था। सर्वत "आचार्य वंदना" ५० सवाँ महामहोत्सव, नरनारायणधेव तथा कालुपुर मंदिर की छाप प्रतिकृति सुनहले रंग मे थी। मुख्य दरवाजे पर विशएषकर सहजानंद

स्वामी का दर्शन भी था । कालुपुर मंदिर के पूरे संकुल को भी उत्सव की स्मृति रुप में रोशनी करके दिखाया गया था ।

शुभारम्भ : दिनांक ०१-१०-२०२२ को शायं ५ बजकर ३० मिनट से बैण्ड पर्ति के कलाकार उत्साह पूर्वक अपने वादययंत्र को चाव के साथ कला के साथ बजाये थे । १२ सफेद रंग के घोडे पर घुडसवार नगारा बजा रहे थे । विशाल मात्रा में संत और हरिभक्त धर्मकुल के दर्शन के लिये व्याकुल थे । सायं ६-१५ पर सम्पूर्ण धर्मकुल परिवार का आगमन श्री नरनारायणदेव के जयकारा के साथ श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुप मुख्य दरवाजे पर भूदेवो द्वारा ठाकुरजी की पूजा की गयी । नारियल फोडकर रिबीन को गाटा गया था । मैदान के अन्दर की सभी मार्ग पेवर ब्लोक से पक्का बना दिया गया था । रास्ते के दोनो तरफ हरी घास तथा पेड से रहित कर दिया गया था । मैदान के बीच एक फौवारा लगाया गया था । फौवारे से थोडी दूरी पर श्री नरनारायणदेव के पास मे जिस शिवलिंग पर स्वयं श्रीहरि डभाण में आम के रस से अभिषेक करके पूजन किये थे । यह स्थायी रुप अपने श्री स्वामिनारायण म्युजियम में दर्शन हेतु रखा गया है । वह प्रसादी का शिवजी और पार्वतीजी सबके दर्शन हेतु रखे गये है । पूर्ण धर्मकुल परिवार तथा संत-भक्त आधुनिक यंत्रो द्वारा गुलाब की पंखुडियो के द्वारा सजा कर समैया के साथ मंदिर में आये थे । यहाँ पर श्रीहरि के तीनो स्वरुप ने श्री नरनारायणदेव की तता शिव पार्वती की आरती

करके मंदिर को सभी के दर्शन हेतु कोल दिया गया ।

देव का दर्शन करके जय हो... जय हो.... धर्मधुरन्धर आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीने छडी तथा आनंद हुआ आनंद हुआ..... आनंद हुआ... मंगल गाओ.... मंगल गाओ, मंगल गाओ, इस स्वागत पद के साथ पपू. महाराजश्री, प.पू. लालजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री विशाल सभा के स्टेज पर आये थे । प.पू. गादीवालाश्री तथा पू.श्रीराजा अपने नियत स्थान पर बैठे थे । स्टेज पर प्रसिद्ध श्री नीरजभाई परीख तथा मित्रो द्वारा अजब बना है, आज अवसर अच्छा आया है । इस पद के साथ गुरुवंदना के श्लोक से धर्मकुल की प्रशंसा एवम् ब्रह्मानंद स्वामी द्वारा रचित तथा प.पू. महाराजश्री द्वारा तैयार कराये गये । वीररस का शास्त्रीय संगीत के साथ स्वर बद्ध करके गाये । प.पू. महाराजश्रीने प्रागट्य की बधाई दिये थे ।

वैदिक परम्परा के अनुसार श्रीहरि के तीनो अपररुपोने तथा बड़े लोगोने दीप को जलाया था । अपना उत्सव, अपने यजमान, अपने आचार्य, प.पू. लालजी महाराजश्री द्वारा दिये गये टाईटल एक नये विचाधारा मे जुडकर हजारो हरिभक्त एक समान यजमान होने के कारण अपने संस्कृत पाठशाला के पवित्र भूदेवो के द्वारा पोथी पूजन तथा प.पू. लालजी महाराजश्री कथा वांचक की पूजन किये थे । इसके पश्चात संक्षिप्त सभा में प.पू. बड़े महाराजश्री ने आशीर्वाद दिये थे । श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुपो ग्राउन्ड पर आकर अन्य प्रकल्पो को देककर सभी लिये खोले थे ।

कथामृत : पर्व महोत्सव मे लल्लुजी एन्ड संस क. द्वारा सुशोभित विशाल स्टेज तथा सभा मंडप बनाया गया था । प्रवेश की डिजाईन में परिवर्तन के साथ निर्मित महोत्सव के सभा मंडप मे सोफा तथा कुर्सी पर बैठकर लाखो भक्तजन भगवान की तथा संप्रदाय के सिद्धान्त की कथा सुनकर जीवन धन्य किये । प्रातः और शायं दोनो सत्र में सम्प्रदाय के

संविधान की रक्षा के लिये निडरतापूर्वक कह सके। वैसे देव और आचार्य के निष्ठा के स्वाभिमानो वक्ताओ तथा ऐसे विद्वान कथावाचक पू. महंत शास्त्री स्वामी श्री निर्गुणदासजी (अहमदाबाद) तथा पू. शास्त्री स्वामी श्री पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (जेतलपुर) तथा दोनो संतो ने अच्छी कथा सुनाये थे। यह कथा चार दिन तक चली थी। मंदिर तथा उसमें बिराजमान देव, आचार्य और शास्त्र सम्प्रदाय के तीनो स्तम्भ उसमें भी आचार्य वंदना महोत्सव के अनुरुप धर्मवंशी आचार्य पद की सम्प्रदाय में महत्ता, आचार्यश्री के अबाधित अधिकार, बहनो के गुरु के रुप में प.पू. गादीवालाश्री, शिक्षापत्री, देश-विदेश के लेख इत्यादि श्रीरि द्वारा स्थापित सम्प्रदाय के नींव के सिद्धान्त है। जिस कथा की वर्तमान समय में सम्प्रदाय के लिये अति आवश्यकता है। ऐसी कथा करके निष्ठावान संत-भक्त जो खुश किये। कथा के साथ ही साथ भक्तजनो द्वारा रासोत्सव किया गया था। जब-जब श्रीहरि के तीनो स्वरुप स्टेज पर आकर तब-तब सर्वप्रथम व्यास स्वरुप वक्ताश्री के पुष्पमाला पहनाकर अभिवादन करते है। साथ ही साथ दोनो वक्ता भी श्रीहरि के अपर स्वरुप ऐसे धर्मवंशी आचार्यश्री की यर्थात महिमा समझते हुए। व्यास पीठ से खडे होकर आचार्यश्री की वंदना किये थे। कथा के शायंकाल मे सभा मंडप में आये सभी

लोग ठाकुरजी तथा व्यासपीठ की समूह में आरती की गई थी । कथा तथा विशेष अवसर पर समस्त धर्मकुल अखंड दर्शन देते थे ।

महापूजा : किसी भी हरिभक्तने उत्सव में बडा अनुदान दिया हो । या छोटा अनुदान दिया हो । उसे इस भेद से नही देखना है । उत्सव में सभी यजमानो में समानभाव है । इससे समान भाव आता है । उत्सव में कोई एक सेवा का यजमान नही है । परन्तु पूर्ण उत्सव के यजमान में समानता रहे । पहलीबार महोत्सव के अध्यक्ष प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से मात्र ५००० रुपया की सेवा माँगी गयी थी । सभी यजमानो को उत्सव का समान यजमान पद का अवसर प्राप्त किये । **Name less patrika & har less Sabha** बिना यजमान के नाम की पत्रिका, हार बिना की सभा, प.पू. महाराजश्री इस **Vision**

अर्थात, स्वपन को साकार करने के लिये किसी भी यजमान को स्टेज पर सन्मान नही करें । अभिमान रहित भावना दृढ करके शुभ उद्देश्य से प.पू. लालजी महाराजश्री व्यवहार प्रधान सत्संग मे हार पहनाना बंद किये । सभी यजमानो को समान स्तर से महापूजा का लाभ दिये । १ डोम में एक साथ ५०० पीढा के साथ स्थापना हो सके । ऐसे मे २ डोम बनाये गये थे। दो दिन तक प्रातः एवम् शायं तथा चौथे-पाँचवे दिन केवल प्रातः के समय ४००० यजमान महापूज
ा का

लाभ लिये । एक पीठा पर पति-पत्नि को महापूजा का लाभ उढाये थे । श्री नरनारायणदेव की स्थापना की जगह से भूदेवो ने सभी यजमान को एक समान पूजा कराई गयी । सभी यजमानो को स्मृति स्वरुप श्री नरनारायणदेव की रजत प्रतिमा दी गयी थी । महापूजा की पूर्णाहुति में समयानुकाल प.पू. लालजी महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री आरती करने आये थे ।

Exhibition (प्रदर्शन) : महोत्सव का दर्शन करने वाले प्रत्येक दर्शनार्थी को स्वामिनारायण सम्प्रदाय के एक अनिवार्य और महान आचार स्तम्भ रुप आचार्य पद की महत्ता, उनका पवित्र जीवन, सद्‌गुण, कार्य इत्यादि से ज्ञानित हुए । नव भाग बनाये गये थे । (१) आचार्य पद का परिचय (महिमा) (२) पूर्व आचार्यश्री की फोटो-गैलरी और कार्यो की नोंध (३) वर्तमान आचार्यश्री की गैलरी (४) भावि आचार्य की गैलरी, प्रत्येक गैलरी में आचार्यश्री के दुर्लभ फोटो तथा सम्प्रदाय और समाज के कार्यो को छोटी टिप्पणी मे दर्शाया गया है । वर्मतान आचार्यश्री तथा भावि आचार्यश्री की एक विशेष फोटो गैलरी मैदान के मध्य में श्री नरनारायणदेव मंदिर के सामने भी प्रदर्शित किया गया था ।। जिस में प.पू. महाराजश्री आशीर्वचन को संक्षिप्त अंश भी दिखाया गया था । (५) बुक प्रोजेक्ट जिस में देखने वाले को छ शास्त्रो से ज्ञानित कराया गया था । पढने की आदत बने । सि उद्देश्य से आडियो बुक स्वचारित रुप से एक के बाद एक पेज खुल रहा था । और दर्शनार्थी देख रहे थे । ऐसा सुंदर आयोजन बुक्स प्रोजेक्ट का किया गया था । (६) पगडी दर्शन : स्वामिनारायण सप्रदाय में

आचार्यश्री को लाल पगडी यह आचार्यश्री का प्रतीक है। श्रीजी महाराज के सनय मे यह परम्परा जब-जब आचार्यश्री का गद्दी पर पदारोहण होता है। वेदोक्त विधि से की जाती है। तब गद्दी पर पदोरोहित आचार्यश्री को पगड़ी, खेश और स्वर्णहार पहनाया जाता है। इस परम्परा के स्मृति रुप मे इस विभाग में परम्परा प्रत्येक आचार्यश्री को लाल पगडी तथा खेश उस समये क परिधान का दर्शन कराया गया था। (७) देवश्यमधाम फिल्म : विदेश की धरती पर अमेरिका के वर्जिनिया राज्य में ५४५ एकड भूमि पर प.पू. महाराजश्री के मार्गदर्शन से यहाँ के आई.एस.एस.ओ. के सहयोग से निर्मित हो रहा है। 'देवस्य' संकुल की मुलाकात लेने वाले परिवारो का अध्यात्मिक सांस्कृतिक तथा सामाजिक मूल्य एक ही स्थान पर समझा जा सके। इस आशय से इस प्रोजेक्ट को फिल्म के रुप में प्रस्तुत किया गया। फिल्म देखने की ईच्छा बार-बार होती है। श्री नरनारायणदेव देश के अर्न्तगत यह प्रोजेक्ट स्वर्ग से अधिक दर्शनीय है। प्राकृतिक दृश्य स्वर्ग के समान है। स्वर्ग से अधिक क्यो, क्योंकि यहाँ पर श्री राधिकाजी कुंज विहारजी की मूर्ति श्रीहरि के प्रसादीभूत बर्तनो मे से बनाया गया है। जो सर्व प्रथम पाकिस्तान स्थित अपने मंदिर करांची में प्रतिष्ठित कियाग या था। (८) V.R. गैलरी - पर्व महोत्सव मे जिस V.R. Technology से अहमदाबाद शहर के प्रसादी की जगडे दिखाई गयी थी। इसी प्रकार इस महोत्सव में छपैयाधाम में बन रहे छपैयाधाम का सम्पूर्ण प्रोजेक्ट का

दर्शन कराया गया था। यह प्रोजेक्ट अहमदाबाद देश के लिये गौरव देने वाला सीमा स्वरुप रहेगा। (९) नरनारायणदेव प्रोजेक्ट मैपिंग (फोटो बुथ) आधुनिक तकनीकी द्वारा श्री नरनारायणदेव का दर्शन हमेशा के लिये स्मृति मे रहे। ऐसा प्रयास सि प्रोजेक्ट के लिये धन्यवाद। ओगमेन्टेड रियालिटी (विस्तृत वास्तविकता) V.R. (ऴर्चुअल रीएलिटी) 3D मैपिंग और होलोग्राम जैसी आधुनिक टेक्नोलोजी के साथ सर्वप्रथम इस आधुनिक प्रदर्शन की लोकप्रियता रही। जिसको प्रतिदिन हजारो लोग देख रहे थे।

आचार्यश्री की Documentary फिल्म : एक बडे डोम के थीएटर में बैठककी सुंदर व्यवस्था के साथ अहमदाबाद देश के परम्परा के आचार्यो श्री की जीवनधारा की सुगंध फैलाने वाली तता ऐतिहासिक मूल्यो की रक्षा करने वाली इस डोक्यूमेन्टरी फिल्म की लाखो भक्तजनो ने बार-बार देखा।

संतो, भक्तो द्वारा वंदना एवम् शुभकामना : धर्मवंशी आचार्यश्री से त्यागी, गृहस्थ तथा सभी के गुरु पद पर तथा हजारो संतो

एवम् लाखो हरिभक्तो के हृदय में जिनका स्थान है। विद्यमान अहमदाबाद गद्दी के धर्मगुरु श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. १००८ आचार्यश्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के ५० वे जन्म उत्सव के अवसर पर आचार्य वंदना करने के लिये और शुभ कामना व्यक्त करने के लिये अहमदाबाद देश के सभी संत, सांख्ययोगी बहने तथा देश-विदेश से आये लाखो हरिभक्त। सभी संतो-भक्तोने अपने वाणी द्वारा शुभ कामना व्यक्त किये थे। कई प्रतिनिधि संतो के नाम महंत पुराणी स्वामी धर्मनंदनदासजी, को. देवप्रकाशदासजी, स्वामी देवचरणदासजी, शास्त्री स्वामी कृष्णस्वरुपदासजी, को. पार्षद जादवजी भगत (भुज), स.गु. स्वामी गुरुप्रसाददासजी (अहमदाबाद), महंत शास्त्री स्वामी हरिप्रकाशदासजी, शास्त्री व्रजवल्लभदासजी, शास्त्री स्वामी सत्यसंकल्पदासजी (मूली), शास्त्री स्वामी धर्मनंदनदासजी (जेतलपुर), महंत शास्त्री स्वामी पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (गांधीनगर), महंत शास्त्री स्वामी दिव्यप्रकाशदासजी (नारणघाट), शास्त्री स्वामी रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर), आप सभी लोग पूरे महोत्सव के समय सुंदर सभा का संचालन किये थे। महंत शास्त्री स्वामी अखिलेश्वरदासजी (अयोध्या), स.गु. स्वामी देवस्वरुपदासजी (मथुरा), महंत शास्त्री स्वामी यज्ञप्रकाशदासजी (कलोल), महंत शास्त्री स्वामी सिद्धेश्वरदासजी (ईडर), महंत शास्त्री स्वामी ब्रह्मविहारीदासजी (सुरेन्द्रनगर), महंत शास्त्री स्वामी नारायणवल्लभदासजी (वडनगर), महंत ब्रह्मचारी स्वामी वासुदेवानंदजी (कांकरिया), शास्त्री स्वामी नारायणमुनिदासजी (कोटा), महंत शास्त्री स्वामी धर्मकिशोरदासजी

व्यक्तिगत रुप से की हरिभक्तोने सोने कि हार, अंगुठी जैसे आभूषण देकर गुरुवंदना किये थे ।

(माणसा) और स्वामी विजयप्रकाशदासजी (जमियतपुरा) ।

अहमदाबाद के सभी संतो ने प.पू. महारजाश्री की अविरत सेवा के लिये अभिवादन पत्र दिये थे । भुज, अंजार, मांडवी के संतोने ५१ फुट लम्बे फूल का हार पहनाये थे । भुज के १०० वर्ष के वयोवृद्ध स्वामी सनातनदासजी अपने हाथ से बनाये गये पेडे को श्रीहरि के तीनो अपरस्वरुप को अर्पण किये थे । भुज के सांख्ययोगी महंत शामबाई फईबा ने सभी सांख्ययोगी माताओ की और से सम्प्रदाय के मर्यादा में रहकर पोशाक और पुष्प के हार के भेट मे दी थी । सभी यजमान की तरफ से भूदेवो के द्वारा सभी संतो का पूजन किया गया था ।

सभी हरिभक्तो द्वारा **ISSO** के अलग-अलग चेप्टरो के **USA, U.K.** इत्यादि देश से आये प्रेसिडेन्ट, ट्रस्टी, प्रमुख व्यक्ति हरिभक्त प्रतिनिधि अपने वाणी से शुभकामना दिये थे । अहमदाबाद मंदिर के भूतपूर्व ट्रस्टीओने भेट तथा अभिवादन पत्र द्वारा तथा वर्तमान ट्रस्टीओने भेट अर्पण किये थे ।

आमंत्रित मेहमानो द्वारा शुभकामना : सम्पूर्ण महोत्सव के मध्य ५० जितने राजकीय, सामाजिक, राष्ट्रीय, न्याय, कला, संरक्षण, कृषि सेवा क्षेत्र के अग्रणी महानुभावोने अपने अमूल्य समय का सहयोग दिया था । ये लोग प.पू. महाराज के प्रति शुभ कामना व्यक्त करने तथा महोत्सव की शोभा बढाये थे । प.पू. बड़े महाराजश्री के कई पुराने मित्र तथा प.पू. महाराजश्री की बहन पू. बिन्दुराजाश्री इत्यादि पारिवारिक सदस्य आये थे। सभी के प्रतिनिधि के रुप में सात महानुभावो को याद करें । (१) माननीय मुख्यमंत्री श्री भुपेन्द्रभाई पटेल (गुजरात राज्य) (२) महामहीम राजपाल श्री देवव्रतजी (गुजरात) (३) पूर्व उपमुख्यमंत्रीश्री नितिनभाई पटेल (गुजरात) (४) श्री के. एम. यादव **(IG, CRPF)** (५) सालु एस. महाराणा (महिला शाखा - सेना नामक **CRPF**) (६) श्री प्रभातकुमार वर्मा (विधायक - छपैया गौंडा

જય શાહ સાથે

जिला) (७) श्री सुनिलभाई महेता (अखिल भारतीय सहबोधिक प्रमुख RSS)

कई विशिष्टलोग अपने परिवार तथा बच्चो के साथ आये थे। सभी लोग अपने वक्तव्य में प.पू. महाराजश्री की प्रेरणा-मार्गदर्शन के अन्तर्गत अहमदाबाद मंदिर गद्दी के आधीन हो रही धार्मिक सामाजिक, राष्ट्रीय और मानव कल्याण जनक सेवा की प्रशंसा किये थे। हम सभी लोग एक जुट होकर राष्ट्र की सेवा कैसे कर सके। ऐसा प.पू. महाराजश्री के मार्गर्शन से तथा धर्मकुल परिवार के प्रत्येक व्यक्ति को खेश पहनाकर तथा स्मृति भेट देकर सभी को प्रसन्न किये। अपने वक्तव्य में प.पू. महाराजश्री के प्रति

शुभकामना और सत्संग के प्रति सद्भाव व्यक्ति किये। महामहीम राजपालश्रीने प्राकृतिक कृषि पर जोर दिये थे। आप की प्रेरणा और मार्गदर्शन से प्राकृतिक खेती करने वाले गुजरात राज्य के ३३ जिला के ५०० संयोजक, सहसंयोचक सहित सभी किसान प.पू. लालजी महाराजश्री के बुलावा से

માનનીય મુખ્યમંત્રી શ્રી ભૂપેન્દ્રભાઈ પટેલ

શ્રી સુનિલ મહેતા (રાષ્ટ્રીય બૌધિક પ્રમુખ-આર.એસ.એસ.)નું સન્માન

મહામહિમ રાજ્યપાલશ્રી

મહાનુભાવોનું સન્માન

महोत्सव मे आये थे । इसमें से प्रत्येक को प.पू. महाराजश्री तथा महामहीम राजपालश्रीने शाल देकर सम्मानित किये थे । और प्रोत्साहित किये थे। २ अक्टूबर को राष्ट्रपिता गांधीजी का योगानुकाल जन्मदिन होने के कारण सभी लोग मिल राष्ट्रगान गाये थे ।

वुमन विंग कमान्डेन्ट सालु एस. महाराना CRPF के ८० महिला बटालियन साथ कूच करके सभा मंडप में विराजी थी । आप सभी का सम्मान प.पू. गादीवालाश्री तथा प.पू.श्रीराजाने किया था । वीर जवानो का सम्मान प.पू. महाराजश्रीने तथा प.पू. लालजी महाराजश्रीने किया था । धर्मकुल की राष्ट्रभावना का प्रत्यक्ष दर्शन लोग किये ।

स्वास्थ्य सेवा : महोत्सव का एक अंग स्वास्थ्य सेवा के लिये प्रधानता दी जाती है। डॉ. शशांक पण्ड्या (डायरेक्टर GCRI), डॉ. विरल ए. परीख (साइकटिस), डॉ. अनीस चंद्राणा (हृदय रोग विशेषज्ञ CIMS Hosp.), डॉ. राकेश एस. जोशी (सिविल अधीक्षक), डॉ. आनंद शाह (GCRI), डॉ. विनीत मिश्राजी (डायरेक्टर KDRC) इत्यादि गुजरात के प्रसिद्ध विविध रोगो के विशेषो के ज्ञानका लाभ दिये। जिसका सभीने लाभ उठाया था। सामान्य रुप से आज कल समाज में B.P., केन्सर, किडनी के रोड, हृदय के रोग तथा मानसिक रोग प्रभावित कर रहा है। इस लिये इन रोगो से किस तरह सुरक्षित रहा जाये। इसके लिये स्लाइड शो, रोग के लक्षण तत्पश्चात उपचार किस तरह क्रिया जाये। उसे समझाये थे। रोगो को रोकने के शुद्ध शाकाहार, विहार, व्यायाम तथा व्यसन रहित संयमी जीवन एवम् मानसिक रोग को रोकने के लिये योग, ध्यान तथा धर्म और सत्संग पारायण पर बलदिया गया। स्त्री रोग विशेषज्ञ महिला चिकित्सको ने सभा में अपने ज्ञान का दान किये।

मेडिकल केम्प के एक बड़े डोम में विसिष्ठ नागरिक बर्ल्ड इंडिया, के.डी. अस्पताल तथा सिविल IKD सिविल केन्सर और रेडक्रोस की सहायता से मेडिकल हेल्थ सहायता, अंगदान, रक्तदान तथा मरीजो के लिये जनरल OPD ओर्थोपेडिक, आँख, हृदय के रोको के लिये निःशुल्क सलाह और दवा की सुविधा दी गयी थी। तथा आँख में मोतियाविंद के २२ रोगियो को निःशुल्क शल्य क्रिया करने के लिये कार्ड दिया गया था। महोत्सव की स्वास्थ्य समिति के प्रयास से निम्न लिखित स्वास्थ्य सेवाये दी गई थी।

(१) रक्तदान ५३४ रक्त की थैलियाँ थेलेसेमिया सिविल अस्पताल के लाभ हेतु

(२) अंगदान (मृत्योपरांत) शरीर के अंगो का दान - प्रतिज्ञा पत्र ५०१ पूर्ण किये गये।

(३) जनरल ओ.पी.डी. १७६१

(४) हृदयरोग के मरीज - ९८

(५) नेत्र रोगी - ४४८

(६) हड्डी के रोगी (ओर्थोपेडिक) - ४२८

(७) त्वचा रोगी - २९०

इसके उपरांत की एम्बुलेस सेवा देना। प्रत्येक आमंत्रित चिकित्सको को स्वास्थ्य समिति के सदस्यो की यथोचित सम्मान किया गया था।

महिला मंच : महोत्सव के तीसरे दिन दोपहर में २ बजे ४ बजे तक महिला मंच का प्रबन्ध किया गया था । पू. श्रीराजाश्रीने दीप प्रगट करके शुभारम्भ की थी । सां.यो. गीताबा, सां.यो. भारतीबा और सत्संग परिवार की ही T.V. कलाकार मुरलीबेन के उद्घोष के बाद स्त्री रोग विशेषज्ञ डॉ. अत्रे देसाई (गायनेक ओन्कोलाजी), डॉ. प्रियंका चीरपाल (ओकोप्लास्टिक ब्रेस्ट सर्जन) तथा डॉ. नीता मिश्रा (ह्युमन हेल्थ), स्त्री रोग की प्रीवेन्टीव केयर (रोकने के लिये) सहित अन्य पूरी सूचना स्लाइड शो के साथ विस्तृत रुप से किया गया था । पू. राजाश्रीने आधुनिक तकनीकका उपयोग करके, सास-बहू के सम्बन्ध, संस्कार के साथ प्रगति, विदेश में भी भारतीय संस्कारो का सिंचन पर प्रकाश डाली थी । प.पू. गादीवालाश्रीने सभी महिलाओ को शुभ आशीर्वाद तथा मुरलीबेन का सम्मान किये थे ।

रास गरबा : आचार्य वंदना महोत्व के समय नवरात्रि का पर्व भी चल रहा था । लगातार पाँच दिन तक प्रतिदिन रात्रि में महालक्ष्मीजी तथा दुर्गादेवी माँ पार्वती की स्थापना करके दोनो माता के सानिध्य में तथा प.पू. लालजी महाराजश्री और प.पू. श्रीराजा की उपस्थिति में गुजरात के प्रसिद्ध कलाकार ऋत्वी पंड्या, राग महेता, सलक पंड्या, कीर्ति सागठिया, पायल शाह तथा अमित त्रिवेदी तथा स्पर्धी कलाकारो द्वारा अपने बैड के साथ प्रस्तुत रास गरबा सम्प्रदाय के मर्यादानुसार (भाई-बहन अलग) अच्छे रुप से किये थे । स्थान पर आधुनिक मांडवी की रचना करके LED स्क्रीन लगायी गयी थी । संगीत के आधुनिक साधनो के साथ रास-गरबा पूरा किया गया था । युवक-युवतियो का रास अलग-अलग शायद यही पर सम्भव हो सकता है । क्योकि सभी का धर्म सुरक्षित रह सके । इसके प्रणेता स्वामिनारायण भगवान है । श्रीहरि ने शिक्षापत्री में पंचदेवो की पूजा करने का पूर्ण आदेश दिये है । पू. श्रीराजा प्रतिदिन माताजीकी आरती साथ रास गरबा का शुभारम्भ करती थी । कलाकार गणेश वंदना के साथ करते थे । अपने सत्संगी पूरव पटेल पूरे कार्यक्रम मे पुरा सहयोग दिये थे । प.पू. लालजी महाराज युवक कलाकारो तथा पू.श्रीराजा युवती कलाकारो का प्रतिदिन सम्मान किये थे । रास-गरबा के पश्चात शुद्ध सात्विक नास्ता खिलाया जाता था ।

महाप्रसाद : भोजन और भजन इस सम्प्रदाय की एक विशेष लक्षण है । भूखे भजन नही होता है । इस लिये भोजन और प्रसाद के संत, भक्त तथा आमंत्रित अतिथी के लिये कुछ ६ डोम बनाये गये थे । दोपहर को दो मिठाई तथा शायं एक मिठाई के साथ लोग बिना-भेद भाव के महाप्रसाद ग्रहण किये थे । स्वंय सेवको के लिये स्थल पर ही प्रातः नास्ता की व्यवस्था की गयी थी ।

शेष संस्मरण : महोत्सव १३० एकड के विशाल भाग पर किया गया था । महोत्सव का कवरेज गुजरात समाचार, दिव्य भास्कर ने किया था । स्थल पर ही डोम वाहन कार्यालय, ठहरने का कार्यालय, स्वयं सेवक कार्यालय, NRI कार्यालय तथा लाकर रुम बनाया गया था । १० डोम रुकने के लिये बनाये गये थे । बगल में त्रि मंदिर के आवास तथा यु.के., ओस्ट्रेलिया, यु.एस.ए., केन्या, ईस्ट आफ्रिका इत्यादि देशो से आये हुए । लगभग २०० NRI के ठहरने की व्यवस्था नजदीक के होटल में की गयी थी । अहमदाबाद

के १८ क्षेत्रो से तथा आसपास के गाँवो से आने वाले भक्तो के लिये AMTS बस, प्राईवेट बस, आयसर गाडी की व्यवस्था की गई थी । सभा मंडप के स्टेज के बैक ग्राउन्ड में अनंत कोटी ब्रह्मांड का रुप दिखाया गया था । चलने में जो लोग असमर्थ थे उनके लिये चार गोल्फकार (गाडी) तैनात की गई थी । बच्चो के मनोरंजन के लिये । खेलनगरी बनायी गयी थी । एक साहित्य स्टोर तथा एक श्री स्वामिनारायण मासिक के पंजीकरण कार्यालय, एक प्रशासनिक कार्यालय तथा धर्मकुल के निवास हेतु एक सुंदर घर बनाया गया था । श्री स्वामिनारायण मासिक के कई नये सदस्य पंजीकृत किये गये । इस प्रसंग सभी लोग व्यसन मुक्त रहे थे ।

भक्ति मार्ग में प्रवेश हेतु गुरु मंत्र लेना अनिवार्य है । श्रीहरि द्वारा स्थापित परम्परानुसार गद्दी पर आसीन आचार्यश्री भाईयो को तथा आचार्यश्री की धर्मपत्नी प.पू. गादीवालाश्री बहनो को गुरुमंत्र प्रदान करती है । इस प्रकार दोपहर के सेशन में दो दिन तक प.पू. महाराजश्री भाईयो को तथा प.पू. गादीवालाश्रीने बहनो को गुरुमंत्र दिये थे । जिसमें कई भाई-बहन नये सत्संगी बने । प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा से प्रत्येक भक्त को ''धर्मवंशी

आचार्य पद'' नाम की पुस्तक तथा देश-विदेश विभाग के लेख को निःशुल्क दिया गया था । इस साहित्य का अध्ययन सम्प्रदाय के संविधान को विस्तृत रुप मे समझने में सहयोगी बनेगा ।

प.पू. लालजी महाराजश्रीने विशेष रुचि लेकर तैयार की गयी । कालुपुर मंदिर की एक APP (ऐप) आपने लांच किये थे । इस एक रुप के माध्यम से मंदिर का दर्शन, कार्यक्रम तथा पुस्तको की सूचना मिल जायेगी ।

समापन : दिनांक ०५-१०-२०२२ दशहरा के दिन प.पू. महाराजश्री सहित धर्मकुल परिवार तथा हजारो हरिभक्तोने कालुपुर मंदिर से श्री नरनारायण आदि देवो का राजभोग दर्शन किये थे । शायं के सेशन में जेतलपुर सहित गुजरात के कई संस्कृत पाठशाला के ५० सारस्वत विद्वान ब्राह्मणोने प.पू. महाराजश्री के समक्ष आशीर्वाद, स्वस्तिवाचन किये थे । मुख्यमंत्रीश्री तथा भूतपूर्व उप मुख्यमंत्रीश्रीने प.पू. महाराजश्री को पुष्पगुच्छ देकर जन्म दिन की शुभेच्छा दिये थे । रात्रि के सेशन में रास गरबा के स्थान पर नृत्य के साथ और रोशनी के साथ आनंद आया । मंगल गाये ।

इस टायटिल टेक के गीत के साथ जन्मोत्सव को मनाये थे । संस्कृति को सुरक्षित रखकर आधुनिकता को स्वीकार किया गया था । श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुप ने केक कटिंग करके प.पू. महाराजश्री, प.पू. बडे महाराजश्री को तथा पू.श्रीराजा और प.पू. लालजी महाराजश्रीने केक खिलाया था । साथ ही साथ प.पू. लालजी महाराजश्री तथा पू.श्रीराजाने अपने पिताश्री प.पू. महाराजश्री को केक खिलाकर एक सुंदर परिवारिक भावना का दर्शन प्रस्तुत किये थे ।

इस अवसर पर प.पू. महाराजश्री ने बताया कि व्यक्ति प्रधान नहि यह तो महाराजश्री की परम्परा है । यह जो पगडी पहने है । उसकी ही महत्ता है । इस लिये हम सब एकत्र हुए है । आप सभी का अत्यधिक आभार ।

अंत में जिसे चाहिए । वह आये मोक्ष मांगने रे लोल..... प्रेमानंद स्वामी कृत इस पद के साथ रास-गरबा प्रारम्भ किया गया था ।

"आचार्य वंदना" श्रीहरि के तीनो अपर स्वरुपो के मुख से अमृत वचन

लेखक : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी-बापूनगर)

प.पू. बड़े महाराजश्री ता. ०१-१०-२०२२ : अपने सम्प्रदाय में एक बात अधिक प्रचलित है। महाराज के समय में एक भाविक सत्संगी दर्जी थे। उन्होने महाराज को अति सुंदर कढाई वाली जरीदार जैकेट-बंडी सिल कर दिये थे। इस बात की जानकारी भावनगर के राजा को हुई कि बंडी अति सुंदर है। राजाने दर्जी को बुलवाया बोलकर बोले कि जो बंडी स्वामिनारायण भगवान को बनाकर दिये हो, ठीक उसी तरह की हमे भी बनाकर दो। तब दर्जीने क्या कहाँ ? आप सभी को ज्ञात है। बंडी तो मैं बनाकर दे सकता हूँ। लेकिन हूबहु तो नही बन सकता है। ''क्यो ?'' क्योकि इस बंडी में हमारे आराध्य के प्रेम का टांका है।'' यह प्रसंग इस लिये बता रहे है कि अहमदाबाद देश मे नरनारायणदेव की छत्रछाया में जितना उत्सव मनाया जाता है। अधिक सुंदर हो जाता है। इस में संतो और भक्तो के प्रेम का सहारा होता है।

किसी का जन्म दिन होता है तो वह केक काटकर मनाता है। दो या तीन चार लोग इकट्ठे होते है। ग्रीस में एक अंग्रेज मिला। अकेले घुम रहा था। उससे पूछा क्या कर रहे है ? जन्म दिन मना रहा हूँ। 'अकेले ?' हाँ अकेले। लेकिन अपना परिवार तो विशाल है। देश-विदेश तथा पूरे जगत में व्याप्त है। और परिवार के मध्य जन्म दिन मनाते है।

महाराज एक बार विशाल सभा में बैठे थे। वहाँ पर एक चारण (गढवी) आया अधिक संख्या में संतो-भक्तो को देखकर वह बोला। स्वामिनारायण ! आप इतने भक्तो को कैसे अक्षरधाम में समाहित करेगे। महाराज तो सर्वप्रथम हंसे। फिर बोले गढवी ! हमारा अक्षरधाम आप के कुनवे जैसा नही है। वह अनंत कोटि ब्रह्मांड को समाहित कर ले ऐसा है।

लालजी महाराज के नेतृत्व में और संतो-भक्तो के परिवार से आज संगोपांग उत्सव की शुरुआत देश-विदेश के भक्तो के मध्य में हो रही है। तब इससे अधिक खुशी क्या होगी। महाराजश्री के यशस्वी प्रशासन में आज सम्प्रदाय ने विशेष ध्यान दिया है। प्रत्येक आचार्य को महाराजने जो कार्य सौंपा वह कार्य समय से पूर्ण हुआ है। महाराज से हम लोग प्रार्थना करते है कि आप के

बच्चे का प्रसंग है । हाजिर रहते है । ऐसी अनुभुति हम सभी को होता है । महाराजश्री के स्वास्थ्य-दीर्घायु के लिये श्री नरनारायणदेव के चरणो में प्रार्थना के साथ आप सभी को आशीर्वाद मिले ।

प.पू. आचार्य महाराजश्री ता. ०२-१०-२०२२ : महामहीम राज्यापलश्री आप के विचार के अनुसार यह प्रकृति होगी तो ही जीवन रहेगा । हम यदि अपने देश की बात करे तो सूर्य से लेकर जल, वायु, वृक्ष आदि की वंदना सदियो से कर रहे है । इस किसानो का अभिनंदन है कि इन कृषको ने महामहिमजी, हम कहेगे किये दिखायी देते है । यहाँ पर आये हुए केवल कृषक इतने ही नही है । इससे अधिक कृषक है । जिन किसानो ने पुरुषार्थ किया है । हम ये मानते है यह हमारी मान्यता है । हम किसी पर दबाव नही डालते है । लेकिन जब तक मानवता **Humanity** नही रहेगी । कुछ भी करे वह नही होने वाला है । गुण बुद्धि युक्त रहे । ऐसा श्री स्वामिनारायण भगवान बोले है । सिखाये है हम लोगो को कि कहाँ पर थूके और कहाँ पर नही थूके । यह शिक्षापत्री में लिखा गया है । यह स्वच्छता सम्बन्धी आदेश है । यह छोटी सीख नही है । इस श्लोक में प्रकृति के प्रति आदर भाव है । यहाँ पर आये जो प्रतिनिधि किसान है । उनका सहृदयपूर्वक अभिनंदन एवम् धन्यवाद देता है । यह बात अग्रसर करे । अन है तो प्राण है । भोजन नही मिलने पर क्या होगा ? सुबह-साँझ को रोटी चाहिए ही ?

महामहिमजी ! पहली बार जब आप आये थे । तब आपका संकल्प था । आप जो कहे थे । वह बात में नही रही । बात करने वाले, गप्पे मारने वाले संसार में अधिक है । जब तक विद्या का उपयोग कोई नही करे तो उसका क्या लाभ है । दूसरे को दिया गया धन और पुस्तक में निहित ज्ञान उपयोग में नही आता है । इस लिये देश विभाग ने सभी को लेख दिया है । पढियेगा, यह केवल शब्द में नही रहे । कुछ लोग ही प्रयास करते है । हमारे सभी परिवार वाले विशेषकर लालजी महाराजश्रीने अधिक मेहनत किये है । हम सभी समर्थशाली है । मैं हमेशा कहता हूँ कि मालिक के साथ होने पर गरीब - कोई

कार्य कठिन नही है । महामहीमजी हम चाहते है कि क्रंकरीट का जंगल नही तैयार हो । पर्यावरण के लिये जब तक वृक्ष उगते जाते तब-तक रेसीडेन्सी नही बननी चाहिए । ये हमारा अनुरोध है । जो आप अग्रसर करेगे तो कार्य अवश्य होगा । कंकरीट के जंगल में रहना है । रहना है । तापमान में ६॰ की वृद्धि होती है । वृक्षो से तापमान कम रहता है । वृक्ष में डाल हो जाने पर लोग वृक्ष को काट देते है । मैं अपने पडोस में एक पेड कटते हुए देखा । मैने पूछा भाई पेड क्यो काट रहे है । तो उत्तर मिला कि इसके पत्ते अधिक गिरते है । हम बोले पत्ते गिरने दे भाई ! वृक्ष मिल कहाँ रहे है ? पर्यावरण कैसा मिल रहा है ? पर्यावरण में भगवान है कि नही ? कंकरीट के जंगल सीमा में रहे । हमें सिद्धान्त और परम्परा का निर्वहन करना हो । यह कृत्य जब अपने अंदर ही नही होगा तो हम आगे क्या दे सकते है । यह वास्तविकता है ।

डांग से लेकर कच्छ और राजस्थान में भी है । मध्य प्रदेश में है । ये किसान पुरुषार्थ करते है । वहाँ पर रेत है । रेत में कुछ उगता नही है । राजस्थान के लोगो से प्रेरणा लेते रहना चाहिए । इस बात का सब तरफ से प्रोत्साहन मिलना चाहिए । आज के जीवनमें सभी को शोर्ट कट चाहिए । रातो-रात में करोड पति बन जाना चाहते है । मेहनत करके खेत में पानी लगाया है ? कुछ लोग हँसते है ? या छोडकर चला गया । स्वामिनारायण सम्प्रदाय में बात नही है । **Action(** है । यह बड़ी बात है । कितना संरक्षण चाहिए । हमें इसकी आवश्यकता नही है । जीवन, धर्म एक शिक्षा है । २१२ श्लोक में से अपने हिस्से में कितना आता है । एक बात पर विश्वास रखता हूँ कि बैठने से कार्य सिद्धि नही मिलती है । कार्य को प्रारम्भ तो करना ही पडता है । एक सुभाषितानि है कि नही सुप्तस्य सिंहस्य प्रविश्यनित मृखे:मृगा करते हुए सिंह के मुख में मृग स्वयं नही प्रवेश करता है । महामहीमश्रीने जो प्रेरणा दिये है । इसको हम सभी मिलकर आगे बढायेगे । खेत मत बेचियेगा, दया रखे, खेत आप नही लाये है । यह वंश परम्परागत आप को मिला है । इसलिये कृषि करे । खेती को सुरक्षित रखे । दूसरे से खेती करवाये । आज छोटी-छोटी वस्तुए खेत में आती है । इतनी समृद्धि के बाद भी हम लोग गरीब होते जा रहे है । सभी लोगो को अवगत कर देना चाहता हूँ कि ५० वर्ष तो एक माध्यम है । इससे भी कल्याण हो तो उसे हमें करना है । इसकी अवहेलना नही करना है । बगल में कौन बैठा है उसे नही देखना है । हम क्या कर रहे है ? हमने जन्म क्यो लिया है ? क्या करने की आवश्यकता है ? और क्या कर रहे है ? इतना भी ज्ञान हो जाते यो आप ज्ञानी है । इसमें सनदा (डिग्री) उपाधि काम में नही आती है । इस परम्परा को आगे ले जाना है । वातावरण तो प्रदान करना पडेगा । बार-बार कहता हूँ कि आप के कहने से कोई व्यक्ति सुधर जाये यह कम हो सकता है । उपदेश तो कई कहे - लिखे गये है । समुद्र जितना हम लोगो के पारस शास्त्र है । लेकिन उसमें से क्या हमारे लिये उपयोगी है । यह हमे निश्चित करना है । हर व्यक्ति भिन्न होता है । लोग लंदन, केन्या, अमेरिका कहाँ-कहाँ से आये है । लेकिन हमें क्या करना है ? वह हम निर्धारित कर सकते है । इसमें रिक्त स्थान मत रखे । इसमें रिक्तता होने पर भेड बकरी, चारा सभी समान हो जायेगे । जो एक समूह में रहेगे तथा एक के पीछे सभी चल देगे । हम लोग ऐसे नही है ? एक मानव निर्णय करे । ६-७ दिन पहले बात किये थे । वे चार लोग है न ? चार व्यक्ति ४०० व्यक्ति । ४००० पंक्ति से अधिक कार्य कर

सकते है। स्वाभिमान क्यो नही है ?

देवव्रतजीने प्रेरणा प्रदान किये है। समय भी दिये है। हमे आशा है कि पर्यावरण और प्राकृतिक समानात्तर चलेगी। आप कहेगे तो अवश्य होगा। कृषको का सम्मान किया गया। इस में हमारे जन्म दिवस से क्या सम्बन्ध है ? इससे हमे क्या ज्ञान मिलता है। कारण अन्य है। कुछ लोग कहते है कि केक काटे, केक नही काटना है। हमे तो जोडना है। यह संसार भिन्न-भिन्न प्रकार के लोगो से परिपूर्ण है। फिर भी एक दूसरे के साध रहे और उनका कल्याण करे। यह जीवन लोगो के कल्याण करने के लिये मिली है। यह प्रेरणा महामहीनजी की है। हम ये बात चुरा सकते है। पैसे की चोरी नही करना है। **Borrow knowledge** इसमें खराबी नही है। **Nothing wrong.**

दूसरी बात यह है कि कुछ भी किया जायेगा उसमे समभाव होगा। इसी सोच के कारण इस उत्सव का कोई मुख्य यजमान नही है। सभी यजमान एक समान है। आप को ज्ञात ही है ये हमारी परम्परा है। पंक्ति भेद नही होना चाहिए। उत्सव के माध्यम से इसे सार्थक किये है। **Not in words only, but in Action.** यह हमारी जिम्मेदारी है। देश भी अपना है। हमे गर्वान्वित करना है। कोई कमजोर स्वस्थ नही है। **We can do anything. Impossible** जैसे कुछ संसार में नही है। संसार में हम लगो आये है बात आगे ले जाना है। मुलाकात होती रहेगी। प्रेरणा मिलती रहेगी। हम एक साथ मिलकर कार्य करेगे। महामहीमजी धन्यवाद, प्रत्येक का अतिशय आभार। **Thanks.**

प.पू. आचार्य महाराजश्री ता. ०३-१०-२०२२ : (श्री प्रभातकुमार वर्माजी, गोंडा जिले के विधान सभा के सदस्य की उपस्थिति मे) संसार में कई जन्म स्थान है। और उस पर विवाद चलता रहते है। मूल छपैया में है। इसमें कुछ भी विवाद नही है। और होगा भी नही। आप सभी की सुविधा के लिये १५३ करोड से धिक का प्रोजेक्ट विडियो में दिखाये है। माँग के लिये नही कर रहा हूँ। प्रत्येक का इसमें सहयोग है। संसार में कोई भी छोटा नही है। छोटे-बडे का अन्तर तो हम लोग बना रखे है। लेकिन गर्व है। यह भगवान का जन्म स्थल है। इस पर स्वाभिमान रखना है। विशेषकर वर्माजी से अनुरोध है। कि दूरिजम डिपार्टमेन्ट आप इंडिया। तथा आप को उसका ध्यान रखना है।

प.पू. आचार्य महाराजश्री ता. ०४-१०-२०२२ : (सालु एस. महाराना, कमान्डेन्ट महिला वींग CRPF की उपस्थिति) आदरणीय संतो, प्रिय हरिबक्तो, भारत माता की जय.... भारत माता की जय..... भारतमाता की जय... महिला बटालियन है। हमारे दूसरे लोग भी साथ आये है। नजटीदी पहचान है। हम तो कैम्पस में उग चुके है। आप में से कुछ लोग देखे भी होगे। हम गर्वान्वित है। आप के त्याग और बलिदान से। आप सभी प्रेरणा है। पूरे समाज के लिये। यह सत्य है। जीवन के अंदर सिर्फ अपने विषय में न सोचते हुए। आप लोग देश समाज के विषय में सोचते है। देश के लिये हमेशा तैयार रहते है। आप सभी लोगो को बहुत धन्यवाद। हम लोगो की मर्यादा होती है। इस लिये गादीवालाश्री गये थे। महिला बटालियन से मिली थी। हम आग्रह करते है कि हमे भी कार्य दिया जाये। मानवता का कार्य यही है। याद रखे। आज सीमा पर जाकर कौन गोली खाने वाला है., चले खडे हो ! पैर में एक काँटा भी चुभ जाये

तो उसे निकाला नही सकते है।

पैर में काँटा चुभ जाये तो खडा भी नही रह सकते है। आज अपने यादवसर आने वाले थे। एक बार उन्होने हमारे जिक्र किये थे। कि तीन गोली पैर में लगी थी। फिर भी पता नही चला। बाद में ज्ञात हुआ। It is not a Goli. It is about the determination, Fractual determination for all of us. in action. हम तो गये थे। बैठ गये। कहाँ सिखने आये है। अनुशासन क्या है? अधिक बाते है। Ladies &Gentleman जो लोग यहाँ पर युनिफार्म में आये। उन्ही के कारण हम सभी सुरक्षित है। शेष सुरक्षा कहाँ है ? घर में भी नही है ? देश के प्रति लगाव होना चाहिए ? हम क्यों नही गर्व महसुस करे, गरीब है ? अमीर है। अमीरी देश की परम्परा है। Ethics नीति है। महिला बटालियन के लिये विशेष धन्यवाद। आप सभी लोग सावधान की स्थिति में खडे होकर भारत माता की जय .... भारत माता की जय............ भारत माता की जय.... Thanku so much.

प.पू. आचार्य महाराजश्री ता. ०५-१०-२०२२ : (संतोने आभिवादन पत्र से सम्मानित किये उस अवसर पर) कोई Achievement नही। यह आप की उपलब्दि है। भाईयो, बहनो, बच्चे, बच्चियों, इतने संत प्रतिनिधि के रुप में इतने बडे Plac (अभिवादन पत्र के अर्थ मे), देव के है। देव का बनकर रहना है। दूसरा क्या करना है ? इसमें कार्य क्या किये है ? मुझे गर्व है कि बालक से लेकर आप सभी बड़े संत हरिभक्त है। आप के साथ बैठ जाते है। (महाराज कितने सरस स्वभाव के है।) प्लेक में कार्यालय में रखूगा। लेकिन आज मैं लिखूगा कि हरिभक्त देव के पक्ष में रखकर उसके बल पर हम सभी है। देव है तो संस्था है। संस्था है तो हम लोग है। शे, क्या है ? सत्य है। हमेशा ध्यान दे हमे गर्वान्वित रहना है। नियम सर्व प्रथम है। ५० वर्ष कहाँ चला गया कुछ ज्ञात नही। मुझे तो याद भी नही। क्लास से छुट्टी लेकर गाँव का भ्रमण किये है। लेकिन आप सभी को प्रेम और लगाव हमारे लिये सबसे बड़ी बात है।

पिछले दिन इसी तरह से बैठे थे। राजस्थान के लगभग ६० भक्त आये हुए ते। जगह कम थी। समावेश कैसे किया जाये। मैं नीचे बैठ गया। हरि भक्तोने कहा आप उपर बैठे, उपर बैठे मुझे उपर नही बैठना है। कुर्सी में कष्ट है। अमेरिका में एक बार गोष्ठी रखे ते। सोफा रखा गया था। मैं नीचे बैट गया। हरिभक्त बोले आप उपर बैठे। उपर बैठने पर कोई उतार सकता है। लेकिन नीचे बैठने पर कोई क्या करेगा ? इस लिये जमीन पर बैठना ठीक है। दासो का दास बनकर रहना चाहिए। महाराज के वचन है। गुण-बुद्धि रखना चाहिए। देश विदेश से आये हुए जो परिवार आज हुए है। वह बार-बार एकत्र होगे। बच्चे बच्चियो को इस तरह का माहौल दे। केवल उपदेश ही नही देना चाहिए। नही तो हाथ पकडकर नीचे कर देगे। अधिक समय नही लेगे। लेकिन यह आप को अर्पण करता हूँ। धन्यवाद।

प.पू. बड़े महाराजश्री ता. ०५-१०-२०२२ : आज में स्वयं को अति भाग्यशाली महसूस कर रहा हूं कि मेरे पौत्र की उपस्थिति में मेरे पुत्र का ५० वाँ

जन्म दिन मनाया जा रहा है । हमें याद है, महाराजश्री एक वर्ष के थे । वह उनका पहला जन्म दिन था । इनको लेकर सभा में आये तथा साथ ही गद्दी पर बैठाये थे । अलग से कुर्सी नही रखी गयी थी । बापूजी हम से कहे थे कि अहमदाबाद देश की परंपरा है कि आचार्य के घर जिस दिन पुत्र पैदा हो वह उसी दिनसे गद्दी का अधिकारी बन जाता है । इसके लिये कोई और बिधि नही की जाती है ? बापुजी ऐसा भी कहे है कि जिस दिन से लालजी महाराज का उपनयन किया हो जावे । उसी दिन से वह गुरुमंत्र देने के अधिकारी हो जाते है । संत को दीक्षा देना तथा मूर्ति प्रतिष्ठा करने का अधिकारी मिल जाता है । मेरे काल में जब मै लालजी महाराज के पद पर थे । तब विशेषकरके भुज के संतो को दीक्षा दिये थे । तथा मूर्ति प्रतिष्ठा भी किये थे । यह अहमदाबाद देश की एक परम्परा है । आचार्यश्री तो मेरे पुत्र है । आपके तो धन है । पूँजी है । इस लिये आप को रक्षना करना है । सरदार पटेल ने जो कार्य देश को एक करने के लिये । कई राजा सत्ता का विलीनीकरण किये थे । जो नही माने वे भाग गये । जैसे जूनागढ के नवाब पाकिस्तान भाग गये । उसी तरह सम्प्रदाय के लिये गौर वकी बात है कि अलग-अलग ट्रस्टो को नरनारायणदेव ट्रस्ट में समाहित किया जा रहा है । प्रत्येक मंदिर को श्री नरनारायणदेव के एक छत में लाया जा रहा है । प्राचीन हरि मंदिर एवम् शिखरबद्ध मंदिरो के कागज अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री के समय आचार्यश्री के नाम से थे । आचार्यश्री का पद एक परम्परा है । नियम है । आज महारजाश्री उत्तम कार्य कर रहे है । वे सबको समझकर कर रहे है । ये कार्य श्री नरनारायणदेव की गद्दी के लिये कर रहे है । आपका ट्रस्ट नरनारायणदेव को लिख देना है । मंदिर कोई लेकर जाने वाला नही है । बल्कि आप की आवश्यकता होना पर कालुपुर मंदिर से मदद भी मिलती है ।

लालजी महाराज का खूब अभिनंदन क्योकि जो ज्ञान कालेज में मिलता था । वह आज विद्यालय में मिल रहा है । हम लोग जो काम बड़े हो पर किये है । वह यह कार्य छोटी उम्र में कर रहे है । उनके बल मिले, पोषण मिले, समर्थन मिले ऐसा प्रयास करियेगा । इसका मुझे गर्व है । सभी को आशीर्वाद प्राप्त हो ।

प.पू. लालजी महाराजश्री ता. ०५-१०-२०२२ : सर्व प्रथम आदरणीय मुख्यमंत्रीश्री तथा श्री नितीनभाई पटेल और अन्य महानुभाव जो हमे एक परिवार समझकर महाराजश्री को शुभकामना प्रस्तुत करने आये है । हमरो तथा हमारी संस्था की तरफ से आप का अत्यधिक स्वागत है । देश-विदेश से प्रत्येक स्थान से आये हरिभक्त एवम् संत आज कुछ कहने का मन कह रहा है । आप जो कुछ योजना देख रहे है । मात्र यह १५ दिन में पूरा

किया गया है। उत्सव के समय वर्षाकाल था। उस समय कई प्रश्न आ रहे थे। नवरात्रि के समय भी वर्षा की भविष्यवाणी की गयी थी। १५ सितम्बर तक तो पूरे गुजरात में वर्षा रही थी। इतने बडा उत्सव मनाना। एक बड़ा प्रश्न था। पर्व के समय अलग समस्या थी। उस समय कोरोना का समय था। फिर भी भगवान की कृपा से कोरोना अदृश्य हो गया था। उसी प्रकार इस उत्सव के समय वर्षा भी रुक गई थी। भगवान साथ में है तो सब कुछ सम्भव है। उत्सव समैया में श्री नरनारायणदेव हमारे समक्ष साक्षत प्रगट रहते है। इसका एहसास हम सभी को होता रहता है।

एक पुत्र के रुप में, मैं स्वयं को भाग्यशाली मानता हूँ। हम सभी को ऐसे महाराजश्री मिले है। साथ ही साथ ऐसे पिता मिले है। इसका मुझे गर्व है। (उसी समय प.पू. महाराजश्री प.पू. लालजी महाराजश्री का आलिंगन किये थे।) क्योंकि इन्होने अपने सम्प्रदाय के लिये सत्संग हेतु परिश्रम किये है। मुझसे अधिक निकट से किसी ने नही देखा है। गादीवालाश्री हो, श्रीराजा हो, बापजी रहे, ये सभी परिवार को समीप से देखे है। आपश्री के त्याग और समर्पण को समीप से हमने देखा है। मैं इनकी प्रशंसा नही कर रहा हूँ। यह सब हमने बालपन से देखे है। यह अपने परिवार के समय का त्याग करके अथवा सम्प्रदाय से जुडा हुआ कोई कार्यक्रम हो उसे त्याग करके सत्संग को प्राथमिकता **(Priority)** देते है। ये सभी हरिभक्त कैसे भगवान से जुडे, सुखी बने, यह आपश्री का प्रमुख लक्ष्य होता है। मूल स्वामिनारायण सम्प्रदाय में कभी व्यक्ति के पूजा नही होती है। यह स्थान देव का है। उसके द्वारा ही पद का गौरव बना हुआ है। इस लिये इस स्थान को पूजा की जाती है। इस लिये स्थान का गौरव है। इस गौरव को बनाये रखने के लिये अपने सम्प्रदाय के हरिभक्तो-संतो की है। महाराजश्री विगत १८ वर्ष से नही यह बचपन से है। आप **Exhibition** (प्रदर्शन) देखेगे तो १००० से अधिक फोटो हमरी व्यक्तिगत लाईब्रेरी में है। मै और श्रीराजा गादीवालाश्री मिलकर चयन करके रखे है। इसमें अयोध्याप्रसादजी महाराजश्री से लेकर वर्तमान महाराजश्री तक का फोटो रखा गया है। जिसमें दिखायी दे रहा है। रजत-स्वर्ण जयंती महोत्सव या शतामृत महोत्सव से लेकर सबको साथ रखकर परिश्रम कर रहेहै। ये सब आप सभी हरिभक्त और संत देखे है।

जन्म दिवस के अवसर पर सभी लोग पुरस्कार, शुभकामना व्यक्त करते है। लेकिन आज ५० वाँ जन्म दिवस है। इस अवसर पर एक ही भेट चाहिए। वह देव के है इस लिये यहाँ पर बैठे है। स्वामिनारायण भगवान ने जो मूल सम्प्रदाय के लिये सिद्धान्त दिये है। इस सिद्धान्त से जुडकर रहे। यह सबसे बडी भेट होगी। भूज से संत लोग आये है। गाँव से देश-विदेश से अधिक संख्या में लोग

शुभेच्छा भेजे है। उन सभी को अतिशय धन्यवाद। एक उत्सव पूर्ण हुआ नही की दूसरा उत्सव आ गया है। इस प्रकार २० से २६ जनवरी २०२३ में मूली का उत्सव है ।नव मंदिर की स्थापना स्वामिनारायण भगवानने किया था। इस में से दूसरा मंदिर मूली में स्थित श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज का २०० वाँ पाटोत्सव आ रहा है । मूली के राधाकृष्णदेव का इतिहास देखे तो बहुत बृहद है। इसका लाभ लेने के लिये सपरिवार आमंत्रण दे रहा हूँ। हम सभी इस उत्सव में भाग लेगे। इस उत्सव के द्वारा हम सभी में श्री नरनारायणदेव के प्रति निष्ठा और श्रद्धा बढे ऐसी प्रार्थना करते है।

प.पू. आचार्य महाराजश्री ता. ०५-१०-२०२२ : मुख्यमंत्रीश्री भूपेन्द्रभाई और नीतीनभाई दोनो महानुभाव सफल व्यक्ति है। और हमारे पडोसी भी है। अत्यधिक धन्यवाद। आप सभी हमारी ताकत है। यह वास्तिवकता है। आप सभी भाई बहन,वच्चे-बच्चियाँ जितना अधिक शिक्षित होगे। प्राथमिक शिक्षा की बात नही है। धार्मिक शिक्षा उसमें भी जितना सिद्धान्तिक शिक्षित रहेगे तो संस्था का कल्याण होगा। यह बात सनातन सत्य है। आप मानेगे ? शिकायत वहाँसे आती है जो पोषण करना है। एक तरफ पोषण करते है तो दूसरे तरफ शिकायत आती है। लेकिन देव है। इस लिये सब कुछ होता है। अपना अस्तित्व ही कहाँ पर है ? हमारी योग्यता ही कहा है ? भगवान ने जो कुछ भी दिया है। वह अपनी शक्ति के बाहर है। शास्त्र पढ नही सके तो आडियो बुक्स आप के लिये तैयार है। सारी व्यवस्था आफ के लिये ही है।

सबसे बडी बात यह है कि आप को आनंद मिलेगा। यहाँ पर आने वाले सभी समान है। कोई-छोटा-बडा नहीं है। एक समान अंक लिये है। १०,००० भी नही है। केवल ५००० रुपये मात्र श्रद्दा होतो दे। शेष देव ने बहुत कुछ दिया है। इसका हमें स्वाभिमान है। कोई कुछ स्टेटमेन्ट दे दे। बदनाम तो हम लोग होते है। आप को ज्ञात है। आप के कंदन जहाँ-जहाँ जायेगे। अन्ततः संस्था की बात आती है। हमारी गाडी कभी कही खडी हो गयी हो। उसका अर्थघटन लोग अपने हिसाब से करते है। अपने साथ देव है, संस्था है। यह बहुत बड़ी बात है। विचार करे। हम सभी भेड बकरी नही है। समानता हो लेकिन भेड बकरे की तरह नही हो। सबकी अपनी समझ होती है।

I Borrow Intelligence, not Money

इस लिये स्वाभिमान है। लेडीज बटालियन कमान्डेन्ट के सम्मान के लिये जो अन्त में भारत माता की जय बोले इससे महसूस हुआ कि अब प्रेम आया है। धर्म क्या है ? इसे सर्व प्रथम सोचे। ध्रम सर्व प्रथम घर से प्रारन्भ होता है। इसके लिये वातावरण देना पडता है। हम तो ऐसा स्वीकार करते है। यदि किसी दिन आप अधिक अनुशासन दिखायेगे। बच्चे को खींच कर मंदिर में ले जायेगे। तो वह आप को मंदिर से खींच कर बाहर लायेगा। हम वातावरण ऐसा दे कि बालक तीसरी पीढी का हाथ पकडकर मंदिर मे ले जाये। न्युजीलेन्ड से लेकर नार्थ-ईस्ट कनाडा तक अपने मंदिर स्थित है। साथ में ही सामुदायिक केन्द्र भी है। किसके लिये ? उपवास करने वाली बात है। अभी हम कनाडा मे उतर रहे थे। -30°C का तापमान था।

सब कुछ सफेद-सफेद दिखाी दे रहा था। सफेद रंग की धोती पहनना कठिन है। बात जो मैने कहा है वही आप करे। जिन लोगो की औसत उम्र लगभग २८ वर्ष तक है। जो लोगो सुनते है। उन पर अनुशासन नही करे। -३० पर जिन लोगो को खीचडी कढी मिली वे खुश होगे। तब तक उसे यह बात याद रहेगी। वह व्यक्ति आशीष देगा। यही हमारी विरासत है। आज भी बापजी के द्वारा जो कुछ भी बताया जाता है। मै उसे स्वीकार करता हूँ। **Observe, think & follow** (देखे, विचराक रे, और प्रयोग मे लाये। कोई भी प्रश्न करे तो उसका उत्तर अवश्य दें) प्रश्न के उत्तर की जिम्मेदारी अपनी है। हम यदि अपने सम्प्रदाय का ज्ञान नही रखेगे। तो दूसरे के शंका का निवारण कैसे करेगे। वचनामृत में क्या है ? अर्धरात्रि को महाराज उठकर बोले है कि आप प्रश्न नही पूछे ऐसा नही होना चाहिए। शिक्षापत्री कहा विशाल है। इसने मात्र २१२ श्लोक है। इसमें सभी श्लोक सबको लागू नही पडता है। इसका ध्यान रखना चाहिए।

यहाँ पर आप सभी शांतिपूर्वक बैठे हुए है। कही पर शांति मिलती है तो कही पर नहीं मिलती है। हम लोगो को जो प्राप्त हुआ है। यह किसी के पास नहीं है। पागल होकर आयेगे। तो उत्तर भी उसी तरह का मिलेगा। यह महाराज के शब्द है। यह किसी की छाया में छिपने वाली नहीं है। बाण के उपर बाण लगाना चाहिए। यदि ऐसा नही कर सके तो वहाँ से भाग जाना चाहिए। और उपवास करे। लीगल, इलीगल नही, फरहार करके नहि। आप जितना अधिक ज्ञान रखेगे। उतना ही संस्था का कल्याण कर सकते है।

आपकी दृष्टि अच्छी है तो हर जगह से अच्छी बात सीख सकते है। परिवार की भावना सबसे बडी है। कालुपुर मंदिर में भक्ति माता के प्रतिमा को प्रतिष्ठा की गयी है। बतायेगे ? समय व्यतीत करने ? वहाँ पर **Family Value** की झलक मिलती है। **Respect each other** बडे को छोटे का ध्यान देना चाहिए। छोटे को बड़े का ध्यान रखना चाहिए। अर्थात् आदर भाव रखना चाहिए। कालुपुर मंदिर का दर्शन करते समय इस बात पर विचार अवश्य करना चाहिए। फाईल लेकर वहाँ मत जाये। मेरा इतना कार्य करे। भगवान हमारे दाणिया नही है। बच्चे यह समझे तो उनमें बालपन है। कैसे है ? हाय ! ऐसा करने निस्वार्थ भाव से जायेगे तो भगवान भी खुश होगे। विदेश से भी लोग आये है इस लिये यह बात बता रहा हूँ। दर्शन करें। सभी बात को जड से नही जाने।

सिद्धान्त के साथ समझौता नही करना चाहिए। देव के है तो देव बनकररहे। देव तो आप को सब कुछ दे रहे है। छपैया मे बड़ा प्रोजेक्ट चल रहा है। किसके लिये। सब कुछ अपने पास है। इसके बावजूद हम सभी कंगालियत की अवस्था में जा रहे है। विदेश से आकर कोई विदेशी कहे कि आप का देश अधिक सुंदर है। तो हम मान लेने यह बात सही है। आप को किसी के पास से सिक्षा थोडे लगवाना है। **C.M.** सर मैं इसके पहले सभा मे कहा था। **India is First one country, all others are third one country. Why we not proude it ?** हम सक्षम है। **Data Base** लाकर हम सिद्ध कर सकते है। लेकिन समय की मर्यादा है। परम्परा को सुरक्षित रखना पड़ता है। अहमदाबाद देश कितना भाग्यशाली है। लालजी महाराज का जन्म हो तब से या यज्ञोपवीत के समय १८ वर्ष २१ वर्ष में **Legal Nomination** होता है। शेष बापुजीने कहा यह धार्मिक परम्परा तो है ही।

साहब आप की नम्रता और सरलता के लिये हम सभी गर्व करते है। पहचानते भी है। आप सभी को दूसरे रुप में भी जानते है। पहचान - पहचान के रुप होते है। प्रत्येक की कुंडली होती है। यहाँ पर व्यक्ति की पूजा नही है। देव का रहने पर ही हम सभी आफ के है। और रहेगे भी। आप सभी की सेवा को याद करते हुए। आज से १४ दिन पहले वर्षा की समस्या थी। इस संयोग में आप सभी लोग यहाँ बैठे है। यहाँ पर बैठना अति कठिन कार्य था। लेकिन इस उत्सव मं अपने साथ भगवान का प्रत्यक्षाभाव उत्सव में दिखाई दे रहा है। आप लोग सेवा दिये उसके लिये आप सभी को धन्यवाद। दोनो साहब व्यस्त होने के कारण भी उत्सव में आये। आप दोनो का आभार ! लेकिन आप जो लोग अन्तिम पंक्ति मे बैठे है उनके सहयोग से यह कार्य सफल हुआ आप को माला से यह उत्सव सफल हुआ है। ढोगी माला नही किये है। यह वास्तविक माला का प्रभाव है। सभी लोग सेवा दिये है। जो लोग विदेश से आये है। वे लोग टिकट के खर्च पर आये है। समय का भोग दिये है। वह भी आज के युग में समय का भोग देना सबसे कठिन कार्य है। महाराज के समय हरिभक्त १५ दिन या १ मास तक समय का दान करते थे। सभी लोगोने आनंद उठाया। मर्यादा में रहकर सभी को धन्यवाद ! अंत तक विशेष लोग दिखाई दे रहे है। अभी मैं वहाँ पर आ रहा हूँ। आप सभी लोग चिंता नही करे। बर्थडे का अवसर है। बर्थडे कौन सी बडी बात है ? रात्रि के बाद प्रातः दिनांक बदल जाता है। दिवस नही बदलते है। सब समान रहते है। यदि हम भगावन के निर्मित्त कुछ नही करे तो यह अच्छी बात नही है। पात्रता से अधिक भगवान दिये है। कुछ लोगो को तकिया न रहने पर नींद नहि आती है। हमको तो प्रतिदिन गाँव बदलना पडता है। फिर भी नींद आ जाती है। तकिया का बहाना दूर करे। नींद न आने का अर्थ दिमाग अधिक दौड रहा है। गलत तरफ चल रहा है। हमारे यु.पी. में एक शब्द अति प्रचलित है मुह फट अर्थ कहने पर खराब लगेगा। मै आ रहा हूँ जो कुछ है कह दूगा। खराब लगे तो नही आना अच्छा लगा तो आप अपने ही है। इस लिये आप आये है। काफी समय ले लिये। क्षमा याचना के साथ आप सभी को धन्यवाद।

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के आशीर्वचन में से) एकादशी सत्संग सभा के अवसर पर (कालुपुर मंदिर हवेली) "भक्ति करने पर भी तृप्ति क्यों नही होती"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

हम सभी लोग यहाँ नरनारायणधेव के चौक में भक्ति करने के लिये एकत्र होते है। यह मात्र इस जन्म का फल नही है ? भगवान प्राप्ति की आशा उनके लिये भजन करने यह अंदर से भाव उत्पन्न होता है। यह क्यो होता है ? क्योकि यह पहले का बीज है। और बीज को क्या चाहिए ? उसे पोषण चाहिए तभी वह अंकुरित होता है। पोषण मिलने से जो बीज के अन्दर होता है। वह बाहर निलकता है। इस प्रकार से जो हम पहले के किये है। (अभी जो कुछ भी कर रहे है।) फिर भी इच्छानुसार फल नही मिलता है। जो मिला है। उससे कोई संतुष्ट नही है। उसका क्या कारण है ? उसका मुख्य कारण है कि भगवान और हमारे मध्य जो सम्बन्ध है। वह ९९% स्वार्थ से युक्त है। इसका कारण हमारी ईच्छायो का उत्पन्न होना है। हम लोग यदि किसी धर्म या नियम का जब पालन आरम्भ कते है तो उसमें व्यक्तिगत स्वार्थ निहित होता है। हम लोग अपने स्वार्थ में इतने हो जाते है कि चाहते है कि भगवान नियम विरुद्ध जाकर हमारी मनोकामना पूर्ण कर दे। तो ऐसा नही होता है ? भगवान एक नियमानुसार सृष्टि का संचालन करते है। वह नियम सबको ज्ञात है। जो व्यक्ति जैसा कर्म करेगा वैसा ही फल उसे प्राप्त होता है। अर्थात जो मेरी माँग हो उसे पूर्ण करे। ऐसा सफल नही हो सकता है। संसार में सभी लोग मानता रखते है कि मेरा यह कार्य सिद्ध हो जाये तो मै सभा किलो लड्डू भेट करुगा। या कुछ पैसा खर्च करुँगा। यह रिस्वत की पूजा है। जैसे कुछ सरकारी कार्यालय में हम लोग जाते है तो कुछ काम नही होने पर लोगो धन देते है। कई स्थान पर शर्त अनुसार रिश्वत दी जाती है। जैसे आधा भाग पहले शेष आधा भाग कार्य पूर्ण होने पर देते है। भगवान हमे आधा नही देते है। काम पूरा हो। इतना भी भगवान पर विश्वास नही जितना सामान्य मनुष्य के उपर रखते है। यह गलत बात है। ऐसा नही होना चाहिए। एक बहन का हमारे पास फोन आया। उनका बच्चा १६ वर्ष का था। वह बिमार हो गया। उन्होने ने मनौती किया कि मेरा बच्चा जब स्वस्थ हो जायेगा। तब मैं टोरडा स.गु. श्री गोपालानंद के जन्म स्थल पर गुड चडाउगी। तो वह बहन बोली कि मेरा बच्चा मुझसे बोला कि इस तरह से नही माँग करते है। इससे अच्छा हम गुड लेकर वहाँ जाकर बोले कि आप हमारे साथ रहे।" यह बच्चा कितना समझदार है। कहने का अर्थ यह है कि भगवान के साथ शर्त नही रखना चाहिए। भगवान नियम तोडने लगेगे तो क्या होगा।

भगवान नियम तोडते ही नही है। हम उनसे यह कहे कि यह काम मुझसे खराब हो गया है। इसके बाद में मैं आप को थाल भेट करुगा। यह मेरे कर्म के खाते में नही लिखा जाना चाहिए। तो ऐसा होगा ? कभी नही होगा ? भगवान भी कर्म के नियम से बँधे हुए है। भगवान राम वन में थे। उस समय राजा दशरथ मृत्यु को प्राप्त हुए। राम मृत्यो को टाल सकते थे। रामने ऐसा नही किया था। सृष्टि का नियम सबके लिये समान है। कभी-कभी भगवान छूटछाट प्रदान करते है। लेकिन यह अपवाद में ही है। 'नियम तोडने के लिये भी नियम होता है। यह भगवान से आप का सम्बन्ध कैसा है। उदाहरण ''रास्ते में गरीब मिल जाये तो हम कुछ सहायता कर देते है। अधिक माँग करने पर हम उसकी माँग पूरी नही करते है। क्योकि पहचानते नही है। उसकी कुछ माँग को पूरा करते है। यदि माँगने वाले व्यक्ति को जानते है तो अधिक मदद कर देते है। कहने का अभिप्राय यह है कि पहचान प्राप्ति के लिये सहायक होती है। हमारे माता-पिता हमे १००% सहायता कर देते है। कभी-कभी माँगे बिना सब कुछ मिल जाता है। हमे भगवान के प्रति १००% शरणागत रहना चाहिए भगवान को योग्य लगेगा तो माँग पूरी कर देगे। सबसे अच्छी बात भगवान से कुछ माँगना ही नही चाहिए। सच्चे शरणागत को कुछ माँगना ही नही पडता है। भक्त प्रहलाद भगवान के सच्चे भक्त थे। भगवान से कहे कि मै आप का सेवक हूँ। मुझसे माँग करना सम्भव नही है। फिर भी आप के आज्ञा का पालन करना है। मुझे इसकी ईच्छा ही नही। ईच्छा कभी पूरी नही होती है। तो श्रद्धा घट जाती है। ईच्छा पूर्ण होने पर श्रद्धा बढ जाती है। श्रद्धा की 'आधारशिला' कामना की पूर्ति एवम् अपूर्ति पर आधारित है। ऐसा नही होना चाहिए। श्रद्धा बदले ऐसी कामना नही करना चाहिए मन को नियंत्रित रखना चाहिए। बुद्धि निश्चय करे तो मन नियंत्रित हो जाता है। उदाहरण से समझे आप को यदि गुलाब जामुन अधिक प्रिय है। खाने की प्रबल इच्छा हो गयी है। सप्ताह के बाद आप के सामने गुलाब जामुन खाने का अवसर आ जाये तो आप मन को सुख देने के लिये। ईन्द्रियो उत्तेजित हो जायेगी। हाथ उसे मुख मे ले जाने का प्रयास करेगा। इतने में आप का कोई मित्र ऐसा कहे कि, मत खाये इसमें जहर मिलाया गया है। तो आप क्या करेगे ? आप नही खायेगे, क्योकि बुद्धि निश्चित कर लेती है, यह मुझे नही खाना चाहिए आप की बुद्धि तुरंत निर्णय ले लेती है। बुद्धि को तत्परता एक क्षण में मन को रोक देती है। आप सभी नरनारायणदेव के चौक में बैठे है। प्रत्येक एकादशी को सत्संग के लिये आते है ? क्यो आते है ? आप के बुद्धि में अपने कल्याण का भाव आ गया है। मेरा कल्याण यही से ही होगा। यह भक्ति इस जन्म का फल नही है। पूर्व जन्म से भगवान को प्राप्त करने की लालसा है। उसके कारण से यह है। यह बीज पहले से जन्म ले चुका है। बीज वृद्धि के लिये क्या चाहिए। तो इसके लिये पोषण चाहिए। यह पोषण यहाँ मिल रहा है। अभी उदाहरण से समझाये है। मित्र की बात मान का गुलाब जामुन नही खाये। भगवान ने शास्त्रो के माध्मय से अवगत किये है। यह संसार सुख विषयुक्त मधु की तरह है। यह बात मानते नही है। मित्र के कहने पर गुलाब जामुन नही खाया था। भगवान की बात नही मानते है। एक सरल उपाय है कि भगवान आप के मित्र, मित्र जो बोले वह मानले। भगवान को अपना मित्र भाव समझे कि भगवानने कहा है। 'यह संसार का विषय सुख जहर है। तो भगवान की बात मनाना चाहिए। आज से भगवान के सभी बचनो का पालन करें। तब भक्ति करे। इस का फल हमे प्राप्त होगा। हम लोग भगवान के वचन का यथार्त पालन नही करते है। इस कारण से तृप्ति नही होती है।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी निर्गुणदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at
Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2021-2023
Issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2023